समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

वर्ष–2021
YEAR-2021

संस्करण–द्वादश माह–मई
Edition -XII Month- MAY

'काव्यमय श्रद्धांजलि'

साहित्य, संगीत, काव्य, चित्र, लेखन प्रवीण,
सम्पादन अरु प्रकाशन में निपुण हे।
सिने निर्माता, तन्त्र–मन्त्र, योग ज्ञाता तुम,
डॉक्टरी, हकीमी, वैद्यकी में हू निपुण हे।।
कैरम, क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबाल, ताश,
तैराकी, कबड्डी, घुड़सवारी निपुण हे।
कहत 'रजक' कवि कहाँ लौं तिहारी बात,
काकपूत काका के रखत सब गुन हे।।

आँखों में बस अश्रु हैं, वाणी भी है मौन।
'रजक' कहे किससे व्यथा, और सुनेगा कौन??
और सुनेगा कौन, एक तुम ही तो थे बस।
लेते थे दिन रात खबर, बँधवाते ढाढस।।
खोकर निश्छल मित्र, पितृ अरु अग्रज सम अस।
मनहुँ अश्रु घर कर बैठे हों आँखों में बस।।

'डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक'

पिछले दिनों लोकप्रिय टीवी पत्रकार और एंकर रोहित सरदाना का निधन हो गया है।42 वर्षीय रोहित सरदाना ने 24 अप्रैल को ट्वीट कर बताया था कि वो सीटी स्कैन में कोरोना संक्रमित पाए गए हैं।

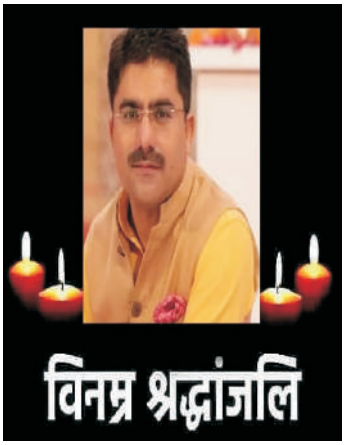

नादअनुसंधान की तरफ से रोहित सरदाना को भावभीनी श्रद्धांजलि।

कोरोना और चीन

कोरोना काल जिसने कर दिया है संपूर्ण विश्व को बेहाल। चीनी चंडालो ने विश्व को गुलाम बनाने की मंशा से कोरोना नामक बायो–लॉजिकल बम को तैयार किया है जिसका दुष्परिणाम चीन सहित संपूर्ण विश्व झेल रहा है। कोरोना की दूसरी लहर ने हमारे देश भारत को संक्रमण और मौत की विभीषिका में झोंक दिया है। अभी हम कोरोना के कहर से उबरे भी नहीं थे तब तक ब्लैक फंगस और वाइट फंगस नामक एक नए संक्रमण ने देश को बुरी तरह से हिला कर रख दिया है। दिल्ली, महाराष्ट्र ,उत्तर प्रदेश, हरियाणा , गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश बिहार आदि लगभग सभी क्षेत्रों में ब्लैक फंगस नामक संक्रमण फैल गया है। शहरों से होकर कोरोनावायरस और ब्लैक फंगस का संक्रमण गांवों में भी फैलता जा रहा है। हमारे देश में विकसित देशों की अपेक्षा में संसाधनों की कमी भी है और सुदूर गांवों में चिकित्सा व्यवस्था का भी अभाव है झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार है। गांव से लगातार मौत और संक्रमण की खबरें इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से प्राप्त हो रही हैं। हमारे देश में अंधविश्वास और लापरवाही भी एक बडा कारण है संक्रमण के फैलने का। जब भारत में दूसरी लहर ने फैलना प्रारंभ किया था तब हमारे देश में चुनाव का दौर चल रहा था। समस्त सरकारी मशीनरी चुनाव में मस्त थी जिसके कारण कोरोना की दूसरी लहर को काफी हद तक नजरअंदाज किया गया। हमने अपने पिछले अंकों में भी चुनाव के दौरान हो रही लापरवाही का उल्लेख किया था और परिणाम इस तरह के होंगे उसको भी अंकित किया था। आज स्थिति अक्षरशरू सत्य साबित हो रही है। विश्व को संकट में डाल कर और वैश्विक अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर खुद को आणविक अस्त्रों को सुदृढ करने की मंशा से चीन के चंडलो ने इस कोरोना बम का विस्फोट किया था। अपनी साजिश में पूर्णतरू कामयाब होते दिख रहे हैं यह चांडाल। एलएसी पर एक बार मुंह की खाने के बाद भी जिनपिंग की चांडाल चौकडी निरंतर साजिश करती रहती है। यहां हम चीन को यह चेतावनी देना चाहते हैं कि उनकी साजिशों से बहुत बडा है हमारे हिम वीरों का हौसला जिसे वह डिगा नहीं सकते। इसमें तो तनिक भी संदेह नहीं है कि चीन ने अपनी षड्यंत्रकारी नीतियों से विश्व को संकट में डाल दिया है। संक्रमण और मौत की विभीषिका में फंसा हुआ विश्व चीन द्वारा की गई इस साजिश का उचित उत्तर भी नहीं दे पा रहा है। यह अत्यंत आवश्यक है कि मानवता को संकट में डालने वाले ऐसे देशों के विरुद्ध संगठित कार्यवाही की जानी चाहिए और इन्हें उचित दंड मिलना चाहिए। वरना यह माओ के वंशज कभी अपनी साजिशों से बाज नहीं आएंगे। अंत में हम संपूर्ण विश्व समुदाय से यह अनुरोध करते हैं कि चीन सहित चीन का समर्थन करने वाले सभी मानवता के शत्रुओं के विरुद्ध कार्यवाही करने का यह उचित समय आ चुका है। यदि इसे नजरअंदाज किया गया तो यह दुष्ट मानव समाज को सदैव संकट में डालते रहेंगे।

संपादक
तरुण सिंह

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह,
संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

समृद्ध भारत जागृति

उधार के मुख्यमंत्री

बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री सुशासन बाबू के नाम से विख्यात माननीय नीतीश कुमार जी, जिन्हें बिहार की जनता ने विगत विधानसभा चुनावों में पूरी तरह से नकार दिया था। चुनाव के परिणामों से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मुख्यमंत्री का पद इनके हाथों से गया। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों में खुद को प्रधानमंत्री पद का दावेदार मानने वाले श्री सुशासन बाबू वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री पद के लायक भी नहीं बचे। जनता ने पूरी तरह से उन्हें और उनकी पार्टी को नकार दिया। एनडीए के नाम पर और बीजेपी के रहमों करम ने उन्हें पुनः मुख्यमंत्री बना दिया। उधार में मिले इस पद का सदुपयोग उन्हें जनता की भलाई और सच्चे सुशासन के रूप में करना चाहिए। बिहार की वर्तमान शासन व्यवस्था इस समय अपने न्यूनतम स्तर पर चल रही है। कोरोना वायरस के संक्रमण के इस काल में चिकित्सा व्यवस्था में थोडी सी लापरवाही भी असहनीय है। बिहार के जिला चिकित्सालय में उपकरणों का अभाव नहीं है परंतु चिकित्सक उपलब्ध नहीं है। अस्पतालों में नए उपकरण उपलब्ध है परंतु चिकित्सा चल रही है पीपल के नीचे। इलेक्ट्रोनिक मीडिया के समाचारों में हम इस चित्र को आसानी से देख सकते हैं। अस्पतालों में नए वेंटीलेटर उपलब्ध है परंतु उन्हें चलाने वाला कोई नहीं है, स्थान रिक्त है। यदि आप वेंटिलेटर चलाना जानते हैं तो कृपया संपर्क करें। उधार का पद प्राप्त होने के बावजूद यदि स्थिति इसी प्रकार बनी रही तो कहीं ऐसा ना हो कि अगले विधानसभा चुनाव से पहले ही माननीय सुशासन बाबू को राजनीति से संन्यास ना लेना पडद जाए। क्योंकि उधार का पद तो आखिर कर्ज ही होता है वह भी जनता का। हम ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि उधारी बाबू को ईश्वर सद्बुद्धि दे और बिहार की जनता इस महामारी के कहर से सुरक्षित रहें। अतः आप सभी से हमारा अनुरोध है कि कोरोना गाइडलाइन का पालन करें, लापरवाही बिल्कुल ना करें, अपना और अपने प्रिय जनों का ध्यान रखें।

विशेष संवाददाता

वीरों की गाथा

निर्बल बकरों से बाघ लडे
भिड गये सिंह मृग–छौनों से
घोडे गिर पडे गिरे हाथी
पैदल बिछ गये बिछौनों से
हाथी से हाथी जूझ पडे
भिड गये सवार सवारों से
घोडें पर घोडे टूट पडे
तलवार लडे तलवारों से
हय–रूण्ड गिरे गज–मुण्ड गिरे
कट–कट अवनी पर शुण्ड गिरे
लडते–लडते अरि झुण्ड गिरे
भू पर हय विकल बितुण्ड गिरे
क्षण महाप्रलय की बिजली सी
तलवार हाथ की तडप–तडप।
हय–गज–रथ–पैदल भगा भगा
लेती थी बैरी वीर हडप
क्षण पेट फट गया घोडे का
हो गया पतन कर कोडे का
भू पर सातंक सवार गिरा
क्षण पता न था हय–जोडे का
चिंग्घाड भगा भय से हाथी
लेकर अंकुश पिलवान गिरा।
झटका लग गयाः फटी झालर
हौदा गिर गया निशान गिरा।
मेवाड–केसरी देख रहा
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड–दौड करता था रण
वह मान–रक्त का प्यासा था।
चढ कर चेतक पर घूम–घूम
करता सेना–रखवाली था।
ले महा मृत्यु को साथ–साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली
रण–बीच चौकडी भर–भरकर
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोडे से
पड गया हवा को पाला था
गिरता न कभी चेतक–तन पर
राणा प्रताप का कोडा था।
वह दोड रहा अरि–मस्तक पर
या आसमान पर घोडा था
जो तनिक हवा से बाग हिली
लेकर सवार उड जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं
तब तक चेतक मुड जाता था
चढ चेतक पर तलवार उठा
रखता था भूतल–पानी को।
राणा प्रताप सिर काट–काट
करता था सफल जवानी को।

कलकल बहती थी रण–गंगा
अरि–दल को डूब नहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी
चटपट उस पार लगाने को।।

वैरी–दल को ललकार गिरी,
वह नागिन–सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो बचो,
तलवार गिरी, तलवार गिरी

'श्याम नारायण पांडे'

शास्त्रों के स्वच्छता सूत्र

हमारे पूर्वज अत्यंत दूरदर्शी थे। उन्होंने हजारों वर्षों पूर्व वेदों व पुराणों में महामारी की रोकथाम के लिए परिपूर्ण स्वच्छता रखने के लिए स्पष्ट निर्देश दे कर रखें हैं–इस 1. लवणं व्यञ्जनं चौव घृतं
तैलं तथैव च।लेह्यं पेयं च विविधं
हस्तदत्तं न भक्षयेत् ।।– धर्मसिन्धू ३पू. आह्निक
नामक, घी, तेल, चावल, एवं अन्य खाद्य पदार्थ चम्मच से परोसना चाहिए हाथों से नही।
2.अनातुरः स्वानि खानि न स्पृशेदनिमित्ततः ।। – मनुस्मृति ४६१४४
अपने शरीर के अंगों जैसे आँख, नाक, कान आदि को बिना किसी कारण के छूना नही चाहिए।
3.अपमृज्यान्न च स्नातो गात्राण्यम्बरपाणिभिः – मार्कण्डेय पुराण ३४६५२
एक बार पहने हुए वस्त्र धोने के बाद ही पहनना चाहिए। स्नान के बाद अपने शरीर को शीघ्र सुखाना चाहिए।
4. हस्तपादे मुखे चौव पञ्चाद्रे भोजनं चरेत् ।।
पद्म०सृष्टि.५१६८८
नाप्रक्षालितपाणिपादो भुञ्जीत ।।– सुश्रुतसंहिता चिकित्सा २४६६८
अपने हाथ, मुहँ व पैर स्वच्छ करने के बाद ही भोजन करना चाहिए।
5.स्नानाचारविहीनस्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः ।। – वाघलस्मृति ६६
बिना स्नान व शुद्धि के यदि कोई कर्म किये जाते है तो वो निष्फल रहते हैं।
6. न धारयेत् परस्यैवं स्नानवस्त्रं कदाचन ।।
– पद्म० सृष्टि.५१६८६
स्नान के बाद अपना शरीर पोंछने के लिए किसी अन्य द्वारा उपयोग किया गया वस्त्र(टॉवेल) उपयोग में नही लाना चाहिये।
7. अन्यदेव भवद्वासः शयनीये नरोत्तम ।
अन्यद् रथ्यासु देवानाम अर्चायाम् अन्यदेव हि ।।
– महाभारत अनु १०४६८६
पूजन, शयन एवं घर के बाहर जाते समय अलग– अलग वस्त्रों का उपयोग करना चाहिए।
8. तथा न अन्यधृतं (वस्त्रं धार्यम् ।।
– महाभारत अनु १०४६८६
दूसरे द्वारा पहने गए वस्त्रों को नही पहनना चाहिए।
9. न अप्रक्षालितं पूर्वधृतं वसनं बिभृयाद् ।।
– विष्णुस्मृति ६४
एक बार पहने हुए वस्त्रों को स्वच्छ करने के बाद ही दूसरी बार पहनना चाहिए।
10. न आद्रं परिदधीत ।।
– गोभिसगृह्यसूत्र ३६५६२४
गीले वस्त्र न पहनें।
सनातन धर्म ग्रंथो के माध्यम से ये सभी सावधानियां समस्त भारत–वासियों को हजारों वर्षों पूर्व से सिखाई जाती रही है।
इस पद्धति से हमें अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता को बनाये रखने के लिए सावधानियां बरतने के निर्देश तब दिए गए थे जब आज के जमाने के माइक्रोस्कोप नही थे। लेकिन हमारे पूर्वजों ने वैदिक ज्ञान का उपयोग कर धार्मिकता व सदाचरण का अभ्यास दैनिक जीवन में सीपित किया था।
आज भी ये सावधानियां अत्यन्त प्रासंगिक है। यदि हमें ये उपयोगी लगती हो तो इनका पालन कर सकते हैं।

Introduction and Basic Concept of Income Tax

The benefits of paying income tax -
If you are searching for advantages of income tax, they can be divided into two categories, personal and public.

Personal benefits of paying income tax

Visa applications-
It is mandatory to provide Income Tax Return (ITR) of at least 2-3 years to get your Visa approved. This is because the ITR helps other countries make sure that you are not leaving India for evading taxes.

Loan approval & High life Insurance Cover -
Big-ticket loans and high life insurance cover require you to submit copies of your ITR. As your income is one of the most important considerations for loan approval and Insurances, lenders or Underwriters confirm the same with the help of your ITR.

Income proof- For self-employed professionals, like consultants, firm partners, or freelancers, the ITR receipt also functions as their proof of income.

ITR Processing - Assesses can easily carried forward their losses to following years and can claim tax refund if excess deducted or deposited over tax liability.

Public benefits of paying income tax

Public infrastructure - It is with the help of the taxes paid by taxpayers that the Government can fund infrastructure projects.

Welfare schemes- From health, education, housing, unemployment, to food programmes. Income tax is one of the primary sources of fund collection for such programmes.

Scientific research and defense - Tax money also helps the Government allocate adequate funding to maintain and improve the defense capabilities of our country.

Some other ways in which the Government uses the tax money are:

* Providing essential utilities like energy, water, waste management, etc.
* Government operation
*Salaries of Government and state employees
*Pension schemes
*Law enforcement

Sunil Aggarwal
Aggarwal Sunil & Associates
Chartered Accountants
Email: - aggarwalsunil.associates@gmail.com
 # 91 8826 99 7310

'नाद अनुसंधान ट्रस्ट व भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट के संरक्षक विश्वविख्यात् संगीत–मनीषी डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग का निधन'

हाथरस। विश्वविख्यात् संगीत–लेखक, सम्पादक, अनुवादक, समीक्षक और प्रकाशक के साथ–साथ फिल्म निर्माता, निर्देशक व फिल्म संगीत निर्देशक डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग का विगत माह 30 अप्रैल 2021 को 88 वर्ष 6 माह की आयु में निधन हो गया । डॉ. गर्ग संगीत कार्यालय, हाथरस के स्वामीय विश्वविख्यात् मासिक पत्र संगीत के प्रधान सम्पादक एवं काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी सहित विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध थे। नाद अनुसंधान ट्रस्ट व भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट के भी वह संरक्षक थे। 30 अप्रैल को पूर्वाह्न लगभग 11:30 बजे उन्होंने बांके भवन, हाथरस स्थित अपने आवास पर अन्तिम सांस ली।

लगभग डेढ़ सौ स्तरीय पुस्तकों का लेखन, सम्पादन व अनुवाद कर चुके डॉ. गर्ग को उनके पिताश्री विश्वविख्यात् हास्य कवि पद्मश्री काका हाथरसी (मूल नाम–प्रभूलाल गर्ग) ने स्वयं द्वारा 1932 में सीपित अपने प्रकाशन–संस्थान संगीत कार्यालय (पूर्व नाम गर्ग एंड कम्पनी) एवं 1935 से प्रारम्भ मासिक संगीत की जनवरी 1955 में ही अपने इस सुयोग्य पुत्र को बागडोर सौंप दी। डॉ. गर्ग ने 1959 में हिन्दी में प्रारम्भ की गई मासिक पत्रिका फिल्म संगीत का भी सम्पादन किया जो अर्थाभाव के कारण त्रैमासिक कर दी गई थी और उसके बाद उसका प्रकाशन सखेद बन्द कर देना पड़ा। इसी प्रकार उन्होंने 1957 में अंग्रेजी के पाठकों के हित को ध्यान रखते हुए अंग्रेजी में भी मासिक पत्रिका Music Mirror' का प्रकाशन व सम्पादन किया किन्तु आर्थिक संकट के चलते उसे भी बन्द कर देना पड़ा। उन्होंने 1980 में मासिक पत्रिका हास्यरस का भी सम्पादन किया जिसका प्रकाशन 1995 में बन्द कर दिया। कालान्तर में अर्थाभाव के चलते भले ही इन पत्रिकाओं का प्रकाशन बन्द कर दिया गया किन्तु मासिक पत्रिका संगीत का यह सौभाग्य रहा कि उसका 1935 से आज तक निर्विघ्न प्रकाशन चल रहा है। यही नहीं, गुलामी के दिनों में अंग्रेज शासकों द्वारा जब देशभर की लगभग सभी पत्रिकाओं को या तो पूर्णरूप से बन्द कर देना पड़ा अथवा उनके बीच–बीच में कुछ अंक प्रकाशित ही नहीं हो पाते थे, तब भी काका जी की जिद पर संगीत का प्रकाशन अनवरत रूप से होता रहा। कभी–कभी तो उन्होंने एक मास में दो अंक तक प्रकाशित किए गए, भले ही पृष्ठ संख्या आधी कर दी।

डॉ. गर्ग ने मासिक पत्रिका संगीत और संगीत की हर विधा पर तमाम पुस्तकों सहित प्राचीन प्रमुख ग्रन्थों का संगीत कार्यालय, हाथरस के माध्यम से प्रकाशन कर उन्होंने संगीत को घर–घर तक पहुँचा कर इसके प्रचार और प्रसार में जो योगदान दिया वह किसी से छिपा नहीं है। वह केवल एक शास्त्रकार ही नहीं थे वरन् श्रेष्ठ संगीतज्ञ भी थे और सदी के महानतम् सितार वादक भारत–रत्न पण्डित रविशंकर जी के गंडाबन्ध शिष्य थे। उन्होंने संगीत गायन, वादन एवं नृत्य की विविध विधाओं की शिक्षा अनेक विश्वविख्यात् कलाकार गुरुओं एवं उस्तादों से ली। उनके कला–गुरुओं में पण्डित रविशंकर जी के अतिरिक्त श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी (पण्डित रविशंकर जी की धर्मपत्नी), आचार्य्य कैलास चन्द्र देव बृहस्पति जी और पण्डित शशिमोहन भट्ट जी के नाम प्रमुख हैं। डॉ. गर्ग ने जहाँ त्बला, बाँसुरी आदि की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिताश्री काका हाथरसी से ही ली। वाइलिन का ज्ञान श्री डी. आर. ऋषि से लिया। गायन की उच्च शिक्षा आगरा–अतरौली घराने के उस्ताद इनायत खाँ निजामी पीतम जी (रेडियो सिंगर) से भी ली। उन्होंने कथक नृत्य की शिक्षा अपने मित्र आचार्य सुधाकर से ली। वे जाने–माने योग–गुरु भी थे और स्वदेश के अतिरिक्त हांगकांग, सिंगापुर, कनाडा, अमरीका, थाईलैंड और जापान आदि देशों में रेडियो, टेलीविजन व विभिन्न विश्वविद्यालयों में शताधिक प्रदर्शन व कार्यशालाएं योग व सितार के साथ कर चुके थे।ज्ञातव्य है कि डॉ. गर्ग का योग एवं अध्यात्म की ओर बचपन से ही रुझान था और वे अपने पिता के साथ प्रतिवर्ष एक माह तक कर्णवास (बुलंदशहर) में बिताया करते थे। यहाँ बड़े–बड़े निःस्पृह साधु–संतों का उन्हें सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनके बोधक गुरु बंगाली बाबा के नाम से प्रख्यात् संत स्वामी श्री निर्मलानन्द जी महाराज थे। इसी प्रकार शक्तिपात गुरु स्वामी कृपाल्वानन्द जी, योग–गुरु स्वामी श्री शिवप्रकाश परमहंस जी जैसे महान् संतगण थे। दंडीस्वामी बालमुकुन्दानन्द जी उनके आध्यात्मिक पथ–प्रदर्शक थे। वे वृन्दावन के प्रख्यात् संत उड़िया बाबा से भी बहुत प्रभावित रहे। संगीत के अतिरिक्त धर्म, अध्यात्म, योग और प्रकृति के प्रति अनन्य प्रेम के कारण ही उनको हिमालय का स्वच्छंद वातावरण भी खूब भाया। लम्बे समय तक वे जहाँ तिवर्ष गर्मियाँ प्रारम्भ होते ही मसूरी चले जाया करते थे, वहीं अब काफी समय से देहरादून रहने लगे थे। होली बाद गर्मियाँ आते ही हाथरस छोड़ देना व दीपावली के कुछ दिनों पूर्व पुनः हाथरस लौट आना उनका हर वर्ष का क्रम था। वहीं वे एकान्तिक वातावरण में अपनी लेखन–साधना में अहर्निश जुटे रहते थे। वे कुशल चित्रकार, नाट्य–अभिनेता, अध्यात्म, ज्योतिष –शास्त्र, हस्तरेखा–शास्त्र, जीतवनहीत्र–मन्त्र के विद्वान् होने साथ–साथ ब्रजभाषा, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच और जापानी आदि भाषाओं का भी न्यूनाधिक ज्ञान रखते थे। सुरुचिपूर्ण व स्वास्थ्यवर्धक और संयत भोजन के शौकीन डॉ. गर्ग प्राकृतिक चिकित्सा, होमियोपैथी और आयुर्वेद के भी अच्छे ज्ञाता थे। वे विविध खेलों में भी माहिर थे। पतंगबाजी और नाव खेने से लेकर कैरम, क्रिकेट, ताश, फुटबॉल, बॉलीवॉल, ड्राइविंग, तैराकी, कबड्डी जैसे खेलों में वे खासे निपुण थे।सादा जीवन–उच्च विचारों के पोषक डॉ. गर्ग एक ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने अपने लेखनादि किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में अवरोध नहीं आने दिया। वे बड़े–से–बड़े पुरस्कारों को लेने के लिए भी स्वयं न जाकर किसी न किसी को अपने प्रतिनिधि के तौर पर ही भेजने की कोशिश करते थे। अनेक बार उन्होंने मुझसे तक इन कार्यों हेतु जाने का आग्रह किया किन्तु मैं हमेशा टालता रहा। मैंने हमेशा यही चाहा कि वे स्वयं ही जाएँ लेकिन बाद में पता चलता कि वे नहीं गए। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार मैंने देखा है। ऐसे कर्मयोगी को निःस्पृह संत कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग एक ऐसे मनीषी चिंतक थे जिन्होंने देश और दुनिया को उन विषयों पर सामग्री उपलब्ध कराई जिनके बारे में कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा। उनका चिंतन विचित्र व अद्भुत था। संगीत गायन, वादन व नृत्य की हर विधा के शास्त्रीय व प्रायोगिक पक्ष के अतिरिक्त संगीत रत्नाकर (चार भाग), गीत गोविन्द और अभिनय दर्पण जैसे प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद कर उनका सम्पादन व प्रकाशन करना उनके ही बूते की बात थी। संगीत रत्नाकर के तीसरे व चौथे भाग का भी प्रकाशन होने ही जा रहा था कि वे चल बसे। यही नहीं, आवाज सुरीली कैसे करें, संगीत निबंध सागर, भारत के संगीतकार, संगीतज्ञ जन्म–मृत्यु कोश, संगीतकारों की हस्तरेखाएँ, संगीत द्वारा रोग–चिकित्सा, संगीत शब्दकोश, संगीत सम्बन्धी कार्टून जैसी पुस्तकें अन्य कहीं से भी आज पाठकों को पढ़ने को नहीं मिलतीं। विगत कई दशकों में संगीत में पी–एच. डी. और डी. लिट्. का शायद ही कोई ऐसा शोध–प्रबन्ध देखने में आए जिसने डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग की पुस्तकों को उद्धृत न किया हो।ब्रज–भूमि, ब्रजभाषा, ब्रज–संस्कृति, मल्लविद्या, खान–पान और ब्रज–संगीत व कलाओं के प्रति उनके अनन्य प्रेम ने ही उनको ब्रजभाषा फीचर फिल्म जमुना किनारे बनाने को विवश कर दिया। इस सफल फिल्म के वे न केवल निर्माता –निर्देशक थे बल्कि संगीत–निर्देशक भी थे। यही नहीं, वह जितने समय भी मुम्बई रहे, बॉलीवुड के अनेकानेक महान् संगीतकार, गायक–गायिकाएँ और निर्माता–निर्देशक आदि उनके सहज सौजन्य एवं कला–प्रातिभ से

अनुसंधान

(पृष्ठ–4 का शेष भाग)

प्रभावित रहे।
बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. गर्ग अनेकानेक सरकारी व गैर सरकारी स्तरीय संस्थाओं के मानद सदस्य रहे, जिनमें ऑडिशन बोर्ड, ऑल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली (1966–68); बोर्ड ऑफ स्टडीजय एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई (1979–82) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में भी आप भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा एवं नाद अनुसंधान ट्रस्ट, पटना के विशिष्ट संरक्षक सदस्य थे।
डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग संगीत–नाटक अकादमी, नई दिल्ली सुर सिंगार संसद, मुम्बईय एशियन आर्ट एंड कल्चरल सेंटर, मुम्बईय इंडियन एसोसिएशन ऑफ म्यूजिक, कोलकाता राष्ट्रीय संगीत संकल्प, दिल्ली ऑल इंडिया रेडियो व रेडियो सीलोन आदि के परामर्शदाता भी रहे थे।
'यह इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इतने प्रखर प्रतिभा–सम्पन्न और अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्त्व को, जिसने लगभग नौ दशकों तक की अपनी जीवन–यात्रा में 75 वर्षों तक अनवरत व अहर्निश एक मौन–सेवी की भाँति सिर्फ और सिर्फ संगीत के उत्थान के लिए जीवन जिया, सरकारी सुप्रतिष्ठित एक भी पद्म सम्मान तक न ले सका। अब शायद उनके जाने के बाद सरकार की आँख खुले।' भले ही वे पद्म सम्मान जैसे प्रतिष्ठित सरकारी सम्मान से वंचित रहे किन्तु अनेकानेक अति प्रतिष्ठित, सरकारी व अ–सरकारी किन्तु असरकारी दोनों ही प्रकार की संस्थाओं द्वारा उनको व उनकी कृतियों को दर्जनों पुरस्कारों, अलंकरणों व सम्मानों से नवाजा जा चुका था, जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं– हमारे संगीत रत्न पुस्तक–उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत (1958) कथक नृत्य पुस्तक–उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत (1962)–म्यूजिक यूनिवर्सिटी, टोकियो (जापान) द्वारा 'कांस्य–पदक संगीत–सम्मान' (1973)–शरन रानी फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'श्रीसम्मान' (1996) –म्यूजिक फोरम, मुम्बई द्वारा मीडिया एक्सीलेंस अवॉर्ड (1996)–कॉउंसिल फॉर नैशनल डेवलपमेंट द्वारा भारत विकास एक्सीलेंस अवॉर्ड (1997) –स्वर साधना समिति, मुम्बई द्वारा स्वर साधना रत्न अवॉर्डश (1998)–भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, संस्कृति विभाग द्वारा 'सीनियर फैलोशिप (1998)–नागरिक परिषद, देहरादून द्वारा श्री महाराज किशोर कपूर संगीत–साधना पुरस्कार एवं दून रत्न उपाधि (2002)अग्रवाल सभा, हाथरस द्वारा श्अग्रकुल भूषणश उपाधि (2006)पश्चिम बंगाल और केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से कोलकाता में टैगोर अकादमी रत्न अवॉर्ड (2012)कालीकट, केरल की संस्था समकालिक संगीत द्वारा ब्रज संस्कृति और लोक संगीत पुस्तक के लिए संगीत विकास पुरस्कार (2012)संगीत निबन्ध सागर पुस्तक पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा श्हजारी प्रसाद द्विवेदी सम्मान–2012 (2013)साहित्य सागर, भोपाल द्वारा राष्ट्रीय सम्मान समारोह के अन्तर्गत कमल सम्पादन सम्मान (2014)पण्डित सीताराम चतुर्वेदी की स्मृति में अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी द्वारा श्सृजन मनीषीश अलंकरण (2016)कला समय, भोपाल द्वारा कला समय संगीत शिखर सम्मानश (2020) भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा द्वारा संगीत विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण एकादश स्मृति–समारोह परम्परा–2020 में मंजुश्री सम्मान (2020)सही मायने में डॉ. गर्ग जी संगीत के एक ऐसे निःस्पृह साधक और मौन–सेवी रहे जिन्होंने यशार्जन के उद्देश्य से तो कभी–भी कोई कार्य नहीं किया। उदाहरणार्थ यहाँ मैं एक घटना का उल्लेख अवश्य करना चाहूँगा–विगत लगभग डेढ़–दो दशकों पहले मेरे पास मेरी एक शोध–छात्रा मुझे अपनी पी–एच. डी. की थीसिस भेंट करने मेरे घर आई। उसने शोध–कार्य संगीत कार्यालय, हाथरस पर ही किया था, जिसमें मेरा बहुत भारी योगदान था। उसके जाने के बाद मेरे मन में विचार आया कि काकाजी पर भी शोध–कार्य हो चुके हैं और संगीत कार्यालय पर भी किन्तु डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जी जैसे महनीय व्यक्तित्त्व पर अभी तक किसी का ध्यान क्यों नहीं गया? मन बार–बार मुझे इस बात के लिए कचोटने लगा कि मैं किसी ऐसी शोध – छात्रा की तलाश करूँ जो संगीत में पी–एच. डी. डिग्री प्राप्त करने की चाहत रखती हो। ऐसी जिज्ञासु छात्रा को खोजने में मुझे सफलता भी मिल गई। अब बात सिर्फ इतनी–सी रह गई कि डॉक्टर साहब को कैसे मनाया जाए? यदि वे नहीं माने तो सारे प्रयास निष्फल हो जाएंगे। मैंने उनसे धीरे–धीरे आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया और जब उन्होंने कहा कि यदि छात्रा कार्य पूर्ण न कर सकी तो सारा समय भी व्यर्थ जाएगा और आपकी मेहनत भी। खैर। जैसे–तैसे वे तैयार हो गए। मैं भी उस छात्रा को लेकर उनके घर चला गया। उनसे यह भी आग्रह किया कि यह आपके पास बीच–बीच में साक्षात्कार हेतु आएगी और आपको इसको समय देना पड़ेगा। उन्होंने छात्रा से दो मिनट बात करके ही कह दिया कि डॉ. राजेन्द्र कृष्ण जी मेरे बारे में मुझसे अधिक जानते हैं। तुम मथुरा में इनके पास जाकर ही हर बात पूछती रहना। यहाँ मैं समय भी नहीं दे पाऊँगा और मुझसे अब अपने विषय में कुछ बताया भी नहीं जाएगा। फिर मैंने अनमने मन से उसकी सिनोप्सिस तैयार कराई। खैरागढ़ उसे भेजा भी, किन्तु वहाँ से विषय अस्वीकृत इसलिए कर दिया गया कि वहाँ के एक सज्जन अपने कुछ स्वार्थ सिद्ध न होने के कारण डॉ. साहब से कुछ द्वेष मानने लगे थे। मैं भी निराश नहीं हुआ और दूसरी सिनॉप्सिस बनाकर आगरा विश्वविद्यालय भेजी। सौभाग्य से प्रस्तावित विषय न्यूनाधिक संशोधन के साथ स्वीकृत कर दिया गया। डॉ. साहब का अमृत महोत्सव मनाने की भी योजना इन्हीं दिनों बन गई और उसके लिए एक वृहद् लेख लिखने का दायित्त्व भी मुझे सौंप दिया गया। मैं कोई साधन न होने के कारण बार–बार हाथरस जा नहीं सकता था, अतः तय हुआ कि कभी वे मेरे यहाँ आएँगे और कभी मैं उनके पास। डॉक्टर साहब के इस बीच लगभग 9–10 दिन मैंने कई–कई घण्टों तक मथुरा में अपने निवास संगीत–सदन में और लगभग इतने ही दिन हाथरस में उनके निवास पर लम्बे–लम्बे साक्षात्कार लिए। परिणामतः आनन–फानन में ही सही, नवम्बर 2007 में डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग अमृत महोत्सव विशेषांक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो गया। कुछ वर्षों बाद पी–एच. डी. की छात्रा को भी शोध–कार्य कराने में मै सफल हो गया।इतना सब करा देने के पश्चात् डॉ. साहब को लगा कि उनकी आत्म–कथा भी ये मैं ही लिखूँ। मैंने उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर यह कार्य प्रारंभ भी कर दिया। मुझे क्या पता था कि मैं उस कार्य को उनके जीवन–काल में पूर्ण नहीं कर सकूँगा। इसी प्रकार उनकी प्रबल इच्छा थी कि उनके द्वारा संकलित ब्रजभाषा के दुर्लभ छनदों की पुस्तक का सम्पादन भी मैं करूँ। इन दोनों कार्यों के लिए उन्होंने अनेक स्पीडपोस्ट पत्र भी मुझे लिखे और हाल ही में जब 19 मार्च को मैं हाथरस गया तब बहुत जोर देकर इन दोनों कार्यों को पूर्ण करने का आग्रह किया था। एक बार तो उनके मुँह से यह भी निकल गया कि मुझे कभी–कभी ऐसा आभास होता है कि कहीं ये दोनों कार्य और आपके व हमारे साथ–साथ वृन्दावन वास की इच्छा अधूरी तो नहीं रह जाएगी। सम्भवतया उनको निकट भविष्य में ही अपनी मृत्यु का उस समय तक आभास हो चुका था।मैं ईश्वर से अब यही प्रार्थना करता हूँ कि उनके लिए और कुछ कर पाऊँ या न कर पाऊँ किन्तु उनकी यह अंतिम इच्छा अवश्य पूर्ण कर सकूँ। अभी तक तो मैं कल्पना–लोक में विचरण कर अपने आप को डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग मानकर उन पर लिखता रहा हूँ किन्तु जिस दिन से वे इस भौतिक संसार से विदा हुए हैं, मैं लक्ष्मीनारायण गर्ग नहीं बन पा रहा हूँ।स्व. श्री काका हाथरसी जी जिस प्रकार संगीत मासिक के संस्थापक सम्पादक के रूप में अमर रहेंगे, उसी प्रकार संगीत के अधिष्ठाता या नवोन्मेषक के रूप में डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जी अमर रहेंगे। नाद अनुसंधान ट्रस्ट व भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट की ओर से डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जी को सादर विनम्र श्रद्धांजलि।

'डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक'

Retirement Planning for Senior Citizens

When you sow a mango seed, you don't expect it to turn into a fully grown tree in 2-3 years. It usually takes 8-10 patient years for a small mango plant to turn into a tree. Once the tree is mature, you may reap out its benefits (mangoes, shade etc) for many many years.

But when it comes to retirement planning, some people think that 2-3 years of investing will be sufficient to enjoy a hassle free retirement. This kind of mindset is very wrong as retirement planning is like sowing those mango seeds when you are young and reaping its benefits for long once it grows into a fully blown tree.

Nowadays retirement planning has become even more challenging because there are not many options available for a retired person to get fixed monthly income. In order to solve this problem, the Government of India has come up with a new scheme which it is offering exclusively through Life Insurance Corporation of India (LIC) named as "Pradhan Mantri Vaya Vandana Yojna". Let's understand it's key features:

1. Eligibility:

This scheme is currently available till 31st March 2023 and any citizen of India above 60 years of age can invest under this scheme.

2. Interest Rates:

Govt. is offering a fixed rate of pension which it decides at the beginning of each year. The current rate of interest is 7.40% payable monthly.

3. Policy Term:

One can invest in this scheme for a maximum term of 10 years. In case of death of a pensioner during the policy term, the purchase price will be refunded to the beneficiary else in case of maturity the purchase price along with final pension installment shall be payable to the pensioner.

4. Minimum & Maximum Pension Amount:

Minimum Pension= 1000/- per month or 3000/- per quarter or 6000/- per semiyear or 12000/- per year.

Maximum Pension= 9250/- per month or 27750/- per quarter or 55500/- per semiyear or 111000/- per year.

Maximum Investment under this scheme is capped at 15 lakhs

5. Payment of Purchase Price: A lump sum amount has to be paid at the time of purchase. The minimum and maximum amount at the time of purchase are as follows

Mode of Pension	Minimum Purchase Price	Maximum Purchase Price
Yearly	1,56,658/-	14,49,086/-
Half-yearly	1,59,574/-	14,76,064/-
Quarterly	1,61,074/-	14,89,933/-
Monthly	1,62,162/-	15,00,000/-

6. Surrender Value:

The scheme allows premature exit in some exceptional circumstances under which the surrender value shall be 98% of the purchase price

7. Loan:

Loan facility is available after completion of 3 years of policy. The maximum loan that can be granted shall be 75% of purchase price.

All these features make this scheme one of the best investment tool for a senior citizen who needs fixed monthly income.

I hope you found the reading useful.

We look forward to your feedback on **naad.anusandhan@gmail.com**

Thanks for your time.

Pawas Aggarwal
91 87558 26311

MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

स्वाभिमान ,संस्कार, धर्म की मूर्ति– महाराणा

मेवाड़ के महान राजपूत नरेश महाराणा प्रताप अपने पराक्रम और शौर्य के लिए पूरी दुनिया में मिसाल के तौर पर जाने जाते हैं। एक ऐसा राजपूत सम्राट जिसने जंगलों में रहना पसंद किया लेकिन कभी विदेशी मुगलों की दासता स्वीकार नहीं की। उन्होंने देश, धर्म और स्वाधीनता के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई,1540 ईस्वी को राजस्थान के कुंभलगढ दुर्ग में हुआ था। उनके पिता महाराजा उदयसिंह और माता राणी जीवत कंवर थीं,वे राणा सांगा के पौत्र थे। महाराणा प्रताप को बचपन में सभी का नाम लेकर पुकारा करते थे। महाराणा प्रताप उदयपुर, मेवाड में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनके कुल देवता एकलिंग महादेव हैं। मेवाड के राणाओं के आराध्यदेव एकलिंग महादेव का मेवाड के इतिहास में बहुत महत्व है। महाराणा प्रताप जिस घोडे पर बैठते थे वह घोडे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ घोडे में से एक था। महाराणा प्रताप तब 72 किलो का कवच पहनकर 81 किलो का भाला अपने हाथ में रखते थे।भाला और कवच सहित ढाल–तलवार का वजन मिलाकर कुल 208 किलो का उठाकर वे युद्ध लडते थे।
सोचिए तब उनकी शक्ति क्या रही होगी। इस वजन के साथ रणभूमि में दुश्मनों से पूरा दिन लडना मामूली बात नहीं थी। अब सवाल यह उठ सकता है कि जब वे इतने शक्तिशाली थे तो अकबर की सेना से वे दो बार पराजित क्यों हो गए? इस देश में जितने भी देशभक्त राजा हुए हैं उसके खिलाफ उनका ही कोई अपना जरूर रहा है। जयचंदों के कारण देशभक्तों को नुकसान उठाना पडा है।

अगले पन्ने पर अकबर ने की प्रताप की प्रशंसा...

मेवाड को जीतने के लिए अकबर ने कई प्रयास किए। अकबर चाहता था कि महाराणा प्रताप अन्य राजाओं की तरह उसके कदमों में झुक जाए। महाराणा प्रताप ने भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। अजमेर को अपना केंद्र बनाकर अकबर ने प्रताप के विरुद्ध सैनिक अभियान शुरू कर दिया। महाराणा प्रताप ने कई वर्षों तक मुगलों के सम्राट अकबर की सेना के साथ संघर्ष किया। मेवाड की धरती को मुगलों के आतंक से बचाने के लिए महाराणा प्रताप ने वीरता और शौर्य का परिचय दिया।

प्रताप की वीरता ऐसी थी कि उनके दुश्मन भी उनके युद्ध–कौशल के कायल थे। उदारता ऐसी कि दूसरों की पकडी गई मुगल बेगमों को सम्मानपूर्वक उनके पास वापस भेज दिया था। इस योद्धा ने साधन सीमित होने पर भी दुश्मन के सामने सिर नहीं झुकाया और जंगल के कंद–मूल खाकर लडते रहे। माना जाता है कि इस योद्धा की मृत्यु पर अकबर की आंखें भी नम हो गई थीं। अकबर ने भी कहा था कि देशभक्त हो तो ऐसा हो। अकबर ने कहा था,इस संसार में सभी नाशवान हैं। राज्य और धन किसी भी समय नष्ट हो सकता है, परंतु महान व्यक्तियों की ख्याति कभी नष्ट नहीं हो सकती। पुत्रों ने धन और भूमि को छोड दिया, परंतु उसने कभी अपना सिर नहीं झुकाया। हिन्द के राजाओं में वही एकमात्र ऐसा राजा है जिसने अपनी जाति के गौरव को बनाए रखा है।अगले पन्ने पर हल्दी घाटी का विश्वप्रसिद्ध युद्ध...

मेवाड पर आक्रमण :

बादशाह अकबर समस्त प्रयासों के बाद भी महाराणा प्रताप को झुकाने में असफल रहा तो उसने कुंवर मानसिंह को महाराणा प्रताप को समझाने हेतु उदयपुर पहुंचे। मानसिंह ने उन्हें अकबर की अधीनता स्वीकार करने की सलाह दी, लेकिन प्रताप ने दृढ़तापूर्वक अपनी स्वाधीनता बनाए रखने की घोषणा की और युद्ध में सामना करने की घोषणा भी कर दी। मानसिंह के उदयपुर से खाली हाथ आ जाने को बादशाह ने करारी हार के रूप में लिया तथा अपनी विशाल मुगलिया सेना को मानसिंह और आसफ खां के नेतृत्व में मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया। आखिरकार 30 मई ई.सं. 1576, बुधवार के दिन प्रातःकाल में हल्दी घाटी के मैदान में विशाल मुगलिया सेना और रणबांकुरी मेवाड़ी सेना के मध्य भयंकर युद्ध छिड़ गया। मुगलों की विशाल सेना मेवाड़–भूमि की ओर उमड पड़ी। उसमें मुगल, राजपूत और पठान योद्धाओं के साथ जबरदस्त तोपखाना भी था। अकबर के प्रसिद्ध सेना पति महावत खां, आसफ खां, महाराजा मानसिंह के साथ शाहजादा सलीम (जहांगीर) भी उस मुगल वाहिनी का संचालन कर रहे थे, जिसकी संख्या इतिहासकार 80 हजार से 1 लाख तक बताते हैं।

इस युद्ध में प्रताप ने अभूतपूर्व वीरता और साहस से मुगल सेना के दांत खट्टे कर दिए और अकबर के सैकडघें सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। विकट परिस्थिति में झाला सरदारों के एक वीर पुरुष ने उनका मुकुट और छत्र अपने सिर पर धारण कर लिया। मुगलों ने उसे ही प्रताप समझ लिया और वे उसके पीछे दौड़ पड़े। इस प्रकार उन्होंने राणा को युद्ध क्षेत्र से निकल जाने का अवसर प्रदान कर दिया। इस असफलता के कारण अकबर को बहुत गुस्सा आया।

तब तुर्क बादशाह अकबर स्वयं विक्रम संवत 1633 में शिकार के बहाने इस क्षेत्र में अपने सैन्य बल सहित पहुंचे और अचानक ही महाराणा प्रताप सिंह पर धावा बोल दिया।

(पृष्ठ–7 का शेष भाग)

स्वाभिमान.....महाराणा

प्रताप ने तत्कालीन स्थितियों और सीमित संसाधनों को समझकर स्वयं को पहाड़ी क्षेत्रों में स्थापित किया और लघु तथा छापामार युद्ध प्रणाली के माध्यम से शत्रु सेना को हतोत्साहित कर दिया। बादशाह ने स्थिति को भांपकर वहां से निकलने में ही समझदारी समझी।

एक बार के युद्ध में महाराणा प्रताप ने युद्ध में अपने धर्म का परिचय दिया और युद्ध में एक बार शाही सेनापति मिर्जा खान के सैन्यबल ने जब समर्पण कर दिया था, तो उसके साथ में शाही महिलाएं भी थीं। महाराणा प्रताप ने उन सभी के सम्मान को सुरक्षित रखते हुए आदरपूर्वक मिर्जा खान के पास पहुंचा दिया।

जहांगीर से युद्ध रू बाद में हल्दी घाटी के युद्ध में करीब 20 हजार राजपूतों को साथ लेकर महाराणा प्रताप ने मुगल सरदार राजा मानसिंह के 80 हजार की सेना का सामना किया। इसमें अकबर ने अपने पुत्र सलीम (जहांगीर) को युद्ध के लिए भेजा था। जहांगीर को भी मुंह की खाना पडी और वह भी युद्ध का मैदान छोडघ्कर भाग गया। बाद में सलीम ने अपनी सेना को एकत्रित कर फिर से महाराणा प्रताप पर आक्रमण किया और इस बार भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में महाराणा प्रताप का प्रिय घोडे चेतक घायल हो गया था।

राजपूतों ने बहादुरी के साथ मुगलों का मुकाबला किया, परंतु मैदानी तोपों तथा बंदूकधारियों से सुसज्जित शत्रु की विशाल सेना के सामने समूचा पराक्रम निष्फल रहा।

महाराणा प्रताप का हल्दी घाटी के युद्ध के बाद का समय पहाडों और जंगलों में ही व्यतीत हुआ। अपनी गुरिल्ला युद्ध नीति द्वारा उन्होंने अकबर को कई बार मात दी। महाराणा प्रताप चित्तौड छोडघ्कर जंगलों में रहने लगे। महारानी, सुकुमार राजकुमारी और कुमार घास की रोटियों और जंगल के पोखरों के जल पर ही किसी प्रकार जीवन व्यतीत करने को बाध्य हुए। अरावली की गुफाएं ही अब उनका आवास थीं और शिला ही शैया थी।

मुगल चाहते थे कि महाराणा प्रताप किसी भी तरह अकबर की अधीनता स्वीकार कर दीन–ए–इलाहीश धर्म अपना लें। इसके लिए उन्होंने महाराणा प्रताप तक कई प्रलोभन संदेश भी भिजवाए, लेकिन महाराणा प्रताप अपने निश्चय पर अडिग रहे। प्रताप राजपूत की आन का वह सम्राट, हिन्दुत्व का वह गौरव –सूर्य इस संकट, त्याग, तप में अडिग रहा। धर्म के लिए, देश के लिए और अपने सम्मान के लिए यह तपस्या वंदनीय है।
कई छोटे राजाओं ने महाराणा प्रताप से अपने राज्य में रहने की गुजारिश की लेकिन मेवाड की भूमि को मुगल आधिपत्य से बचाने के लिए महाराणा प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक मेवाड आजाद नहीं होगा, वे महलों को छोड जंगलों में निवास करेंगे। स्वादिष्ट भोजन को त्याग कंद–मूल और फलों से ही पेट भरेंगे, लेकिन अकबर का आधिपत्य कभी स्वीकार नहीं करेंगे। जंगल में रहकर ही महाराणा प्रताप ने भीलों की शक्ति को पहचानकर छापामार युद्ध पद्धति से अनेक बार मुगल सेना को कठिनाइयों में डाला था।

बाद में मेवाड के गौरव भामाशाह ने महाराणा के चरणों में अपनी समस्त संपत्ति रख दी। भामाशाह ने 20 लाख अशर्फियां और 25 लाख रुपए महाराणा को भेंट में प्रदान किए। महाराणा इस प्रचुर संपत्ति से पुनरू सैन्य –संगठन में लग गए। इस अनुपम सहायता से प्रोत्साहित होकर महाराणा ने अपने सैन्य बल का पुनर्गठन किया तथा उनकी सेना में नवजीवन का संचार हुआ। महाराणा प्रताप सिंह ने पुनः कुम्भलगढ़ पर अपना कब्जा स्थापित करते हुए शाही फौजों द्वारा स्थापित थानों और ठिकानों पर अपना आक्रमण जारी रखा!

मुगल बादशाह अकबर ने विक्रम संवत 1635 में एक और विशाल सेना शाहबाज खान के नेतृत्व में मेवाड़ भेजी। इस विशाल सेना ने कुछ स्थानीय मदद के आधार पर वैशाख कृष्ण 12 को कुम्भलगढ़ और केलवाड़ा पर कब्जा कर लिया तथा गोगुन्दा और उदयपुर क्षेत्र में लूट–पाट की। ऐसे में महाराणा प्रताप ने विशाल सेना का मुकाबला जारी रखते हुए अंत में पहाड़ी क्षेत्रों में पनाह लेकर स्वयं को सुरक्षित रखा और चावंड पर पुनरू कब्जा प्राप्त किया। शाहबाज खान आखिरकार खाली हाथ पुनः पंजाब में अकबर के पास पहुंच गया।

चित्तौड को छोडकर महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों का शत्रु से पुनरू उद्धार कर लिया। उदयपुर को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। विचलित मुगलिया सेना के घटते प्रभाव और अपनी आत्मशक्ति के बूते महाराणा ने चित्तौडघ्गढ़ व मांडलगढ़ के अलावा संपूर्ण

मेवाड़ पर अपना राज्य पुनः स्थापित कर लिया गया। इसके बाद मुगलों ने कई बार महाराणा प्रताप को चुनौती दी लेकिन मुगलों को मुंह की खानी पडी। आखिरकार, युद्ध और शिकार के दौरान लगी चोटों की वजह से महाराणा प्रताप की मृत्यु 29 जनवरी 1597 को चावंड में हुई।